श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ६ ● अंक : ७०

फरवरी-२०१६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	श्रीकृष्णने नरनारायणदेव की मूर्ति बनवाई	४
०४.	महिमा युक्त मूलीधाम में महोत्सव सम्पन्न	६
०५.	क्या महाराज को सत्यरुप में प्रसन्न करना है	८
०६.	जैसी है वैसी बात	९
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१०
०८.	सत्संग बालवाटिका	१२
०९.	भक्ति सुधा	१४
१०.	सत्संग समाचार	१७

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

इस वर्ष ठन्ढी अच्छी पडी । ऋतु के चक्रानुसार (क्रमानुसार) ऋतु का प्रभाव रहे तो अच्छा होता है, तभी जगत के प्राणी मात्र को सुख मिलता है । समग्र सृष्टि का जीवन सानुकुल हो जाता है ।

महाराज ने हम सभी पर खूब कृपा की है । हम सभी के लिये सब कुछ अनुकूल कर दिये है । यदि हम उनकी आज्ञा का पालन आज्ञात्मक ढंग से करें तो सबकुछ हस्तामलकवत् हो जाय । इस विषय पर प.पू., बड़े महाराजश्री वारंवार कहते है कि दुःख को हम स्वयं आमंत्रण देते हैं । आज्ञा का पालन न करना भी दुःख है । इसलिये विशेष रुप से आज्ञापालन करने के लिये सचेष्ट रहना चाहिये ।

सर्वावतारी श्रीहरिने संप्रदाय में सर्व प्रथम श्रीनगर अमदावाद में स.गु. आनंदानंद स्वामी से तीन शिखरवाला अद्वितीय बेनमून मंदिर का निर्माण कराकर स्वयं अपनी बांहो में भकर स्वस्वरुप परमकृपालु परमात्मा भरत खंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा करके समग्र आश्रितों के कल्याण का मार्ग खोल दिया । ऐसा महाप्रतापी श्री नरनारायणदेव का १९१ वाँ पाटोत्सव-महोत्सव फाल्गुन शुक्ल-३ को संप्रदाय के श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों वेद विधिसे संपन्न होगा । देश विदेश के सभी भक्तों को ऐसा अलौकिक दर्शन का लाभ लेने के लिये सादर अनुरोध है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०१३)

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

सायंकाल - रामपर (कच्छ) पदार्पण।

६. रामपर (कच्छ) पदार्पण।

७. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर तथा महादेवनगर (अमदावाद) शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१०. से ३१. जनवरी तक सीडनी तथा पर्थ (ओस्ट्रेलिया) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर (मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण वहाँ से अमेरिका के लिये धर्म प्रवास हेतु पदार्पण)

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०१३)

११. से ३० जनवरी श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी तथा पर्थ (ओस्ट्रेलिया) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर तथा मेलबोर्न (ओस्ट्रेलिया) मंदिर के प्रथम पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण वहाँ से ओकलेन्ड (न्युझीलेन्ड) पदार्पण।

श्रीकृष्णने नरनारायणदेव की मूर्ति बनवाई

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

अपने सम्प्रदाय में विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में निर्मित हुआ । जिस में अनंतकोटि के ब्रह्मांडाधिपति राजाधिराज परब्रह्म परमात्मा भगवान तपस्वी श्री नरनारायणदेव महाप्रभु की प्रतिष्ठा श्री स्वामिनारायण भवान ने अपने बांहो में भरकर की थी । जिसकी जयजयकार पूरे देश में हुई थी । श्री नरारायणदेव की युगल गाथा अलौकिक है । जो कोई इस स्वरुप का मनन, चिन्तन, श्रवण करता है तो उसके जन्मजन्मान्तर के पाप धो उठते है ।

अंग्रेज गवर्नर सर डनलोप के पुण्य प्रयास से रानी विक्टोरिया ने ''यावच्चन्द्र दिवाकरौ'' पर्यन्त जमीन लिखकर भेंट कर दिया । इसके बाद श्रीहरिने शिल्पशास्त्र के पंडित ज्योतिर्धर पूर्वाश्रम में भरतपुर राज स्थान के सद्‌गुरु स्वामी को मंदिर बनाने का सम्पूर्ण कार्यभार सौंप दिया । मात्र दो वर्ष के स्वल्प समय में मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया । इसके बाद आनंदानंद स्वामीने महाराज के पास मूर्तियो के निर्माण हेतु सन्देश भेंज दिया । उस समय श्रीहरिने शुद्धज्ञानानंद स्वामी, नृसिंहानंद स्वामी तथा सुखानंद स्वामी को मूर्ति के विषय में जानकारी देकर डुंगरपुर के लिये भेंज दिया । वहाँ पर कुछ दिनों में ही श्री नरनारायण के सिवाय मूर्तियो का निर्माण होते ही ऊंट पर लदवाकर अमदावाद के लिये प्रेषित करवा दिया । श्री नरनारायणदेव भगवान के स्वरुप का शिल्पी इससे पूर्व कभी श्री नरनारायणदेव की मूर्ति को नही बनाया था, इसलिये द्विधा में बिलम्ब हो रहा था । संत जल्दी काम पूर्ण करने के लिये बार-बार उलहना दे आते थे । परंतु विलम्ब तो हो ही रहा था । इतने में आनंदानंद स्वामीने पत्र लिखकर भेंजा कि अब मंदिर का काम पूर्ण हो गया है । श्रीहरि थोडे समय में वहाँ आयेंगे । १८७८ फाल्गुन शुक्ल-३ को प्रतिष्ठा करने की पत्रिका गाँव गाँव में प्रेषित कर दी गयी । मुख्य स्वरुप श्री नरनारायणदेव की मूर्ति आजतक नहीं आई । हमे बहुत चिन्ता हो रही है । जिस कीसी तरह माघ कृष्ण अमावस्या तक आजाय तभी इज्जत बचेगी, अन्यथा संप्रदाय का प्रथम मंदिर मुख्य मंदिर के अभाव में प्रतिष्ठित नहीं हो सकेगा, विरोधियों के लिये निंदा का अवसर हो जायेगा । महाराज की डांट सुननी पडेगी ।

पत्र पढकर तीनो संत महाराज की प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु ! यह अब शिल्पी के हाथ की बात नहीं है । आप कृपा कर दीजिये, मूर्तियाँ जल्दी तैयार हो जांय । उसी रात्रि में महाराज ने दर्शन देकर कहा कि पूर्व दिशा में अमुक वृक्ष के नीचे मूर्ति को जमीन में गाड़कर रखा गया है, आपलोग वहाँ जांये, उसे निकलवाकर भेंजे । सुबह होते ही संत प्रभु के बताये स्थान पर जाते हैं वहाँ जिस खेत में मूर्तियाँ थी वह खेत शिल्पी का था । अति मनोहर सुंदर श्यामवर्ण की श्री नरनारायणदेव भगवान के स्वरुप को जमीन के भीतर से बाहर निकाला गया । संत ऊँट गाड़ी में रखकर प्रातः पहुंचने के प्रयास में थे । लेकिन १८० कि.मी. एक रात्रि में सम्भव नहीं था ।

लेकिन प्रभु की लीला दिव्य देवलोक में से ऊँटवाले एकरात्रि में मंदिर का दरवाजा खुले उससे पहले पहुंचा दिये।

इधर आनंदानंद स्वामी को रात-दिन निद्रा नहीं आती थी। रात्रि में ऊँट पर मूर्तियों को देखकर स्वामी की तपस्या सफल हो गयी। बड़ी सजगता के साथ मूर्तियों को नीचे उतारा गया। ऊँटवाले को मजदूरी देने लगे तो वह नहीं लिया। उसने कहा कि हमारे मालिक ने भाड़ा लेने के लिये मना किया है। थोडी देर में दरवाजे से बाहर जाते ही ऊँट तथा ऊँटवाला अदृश्य हो गया।

प्रात: श्रीहरि मूर्तियों को देखने के लिये पधारे तब खुब प्रसन्न हुये। मूर्तियों को देखकर कहने लगे कि ये मूर्तियाँ भक्तों के साथ वात करें ऐसी है हम केवल भगवान श्री नरनारायणदेव के विषय में लिखना चाहते हैं। महाराजने संतो को स्वप्न में जो कहा था वह जानने योग्य है। अमदावाद मंदिर में विराजमान श्री नरनारायणदेव की कथा इस तरह है-

एकबार भगवान श्रीकृष्ण बद्रिकाश्रम पधारे। कठिन तपस्या करते हुये भगवान श्री नरनारायण को देखे। भरत खंड के भक्तों के सुख एवं कल्याण के लिये तप करने वाले दोनो स्वरुपों की पूजा किये। उस समय वे संकल्प किये कि भरत खंड में भव्य मंदिर बनाकर उसमें इन दोनो दिव्य स्वरुपों को प्रतिष्ठित करना है।

भगवान श्री कृष्ण द्वारिका आये। अपनी देखरेख में बद्रिकाश्रम में तप करने वाली वैसी श्री नरनारायण की श्याम वर्ण की मूर्ति शिल्पी के पास बनवाये।

भगवानश्री कृष्ण का अवतार काल राक्षसो के बधमें तथा अधर्म के नाश में बीत गया। मंदिर बनाने का समय नहीं मिला। इसलिये भगवान स्वामिनारायण के स्वरुप में होकर डुगंरपुर में जमीन के भीतर गाड़ी हुई उन मूर्तियों के रहस्य को जानते थे। जो शिल्पी काम किये थे उन्हीं के खेत में जमीन के भीतर गाड़ी हुई मूर्तियों की देख भाल करने का कार्यभार सौंपा गया था। समय बीत गया था फिर भी ५००० पाचं हजार वर्ष के बाद भी वे मूर्तियां जैसी की तैसी थी। उनके रखरखाव का ध्यान रखा गया था। जिसे स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने अपने उपस्थिति में बनवाई थी, जिसे स्वयं भगवान अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किये हो ऐसी मूर्तियों का वर्णन बड़ा दिव्य है, अलौकिक है। जिन मूर्तियों को श्रीहरिने प्रतिष्ठित किया वे मूर्तिया आज भी यथा स्थान विराजमान है। मात्र वे मूर्तियां अमदावाद कालुपुर में ही है अन्यत्र कहीं नहीं।

मूर्तियों की प्रतिष्ठा करके चौखट पर बैठकर अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति भगवान स्वामिनारायण ने कहा कि हम श्री नरनारायणदेव की मूर्तियों में विराजमान होकर भक्तों के मनोरथ को पूरां करेंगे। हम में तथा नरनारायणदेव में कोई अन्तर नहीं है। जो भेद मानंगे वे गुरु द्रोही तता वचनद्रोही कहे जायेंगे। वचनामृत अमदावाद : ६-७, जेतलपुर : ५, ग.प्र. ४८-७४, सारंगपुर : १६, इन प्रकरणों से प्रमाणित हुआ है। इसीलिये अमदावाद में मूर्ति प्रतिष्ठा के बाद भी भुज में श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा किये, लेकिन अन्यत्र नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा कहीं नहीं मिलती जो भी स्वरुप है वे भगवान के ही है। नाम भेद मात्र हैं। जूनागढ में रणछोडराय - त्रिकमराय नाम करण किये। लेकिन वे भी भगवान श्रीनरनारायणदेव ही है।

अमदावाद में बिराजमान श्री नरनारायणदेव भगवानकी मूर्तियों का अनुकरण आज तक कोई नहीं कर सका। भविष्य में भी कोई कर नहीं सकेगा। यह भगवान श्रीकृष्ण द्वारा प्रदत्त स्वरुप है। कितना सुंदर मनोहर, नयनरम्य, दिव्य, अलौकिक, मनमोहक शान्त, धैर्यवान, प्रगट पूर्ण पुरुषोत्तम अक्षरधाम के अधिपति, तपस्वी स्वरुप, धर्म-मूर्तिनन्दन, श्री नरनारायणदेव भगवान विराजमान है। जिन्हे इन स्वरुपों की प्रतीति हो उनके भाग्य की कोई सीमा नहीं। श्रीजी महाराज तथा श्री नरनारायणदेव में लेशमात्र भेद नहीं है। जिस में यह भेद दिखाई देगा उसके दुर्भाग्य का कोई अन्त नहीं। क्योंकि धर्मसुत का वचन ही धर्म है।

स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी द्वारा निर्मित महिमा युक्त मूलीधाम में महोत्सव सम्पन्न

- स.गु. स्वा. श्यामसुन्दरदासजी (महंतश्री मूली)

श्रीजी महाराज के प्रिय सखा स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी जिन्होंने भव्य मंदिर का निर्माण करवाया था। स्वामिनारायण भगवानने उस मंदिर में महाप्रतापी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज को अपने हाथों प्रतिष्ठित किया था। ऐसे मूली धाम में श्री स्वामिनारायण मंदिर के प्रांगण में महोत्सव सम्पन्न हुआ था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर में महंत स्वामी स.गु. श्यामसुन्दरदासजी की प्रेरणा से प.भ. श्री रमेसभाई नारणभाई खेताणी परिवार की तरफ से श्रीमद् भागवत सप्ताह का आयोजन किया गया था। जिस में १४ संहितापाठ, अन्नकूट दर्शन, रात्रिय कार्यक्रम, व्याख्यान माला, इत्यादि कार्यक्रम भी ता. ३१-१२-१२ से ता. ६-१-१३ तक आयोजित हुए थे।

श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण की पोथीयात्रा धूमधाम से निकाली गयी थी। कथा के वक्ता स्वा. रामकृष्णदासजी थे। सात दिन तक कथा श्रवण करने वाले हरिभक्तों को भोजन-प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी। कथाश्रवण के बाद रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होते थे। महोत्सव के तीसरे दिन ता. २-१-१३ को बहनो की सभा में सभी खेताणी परिवार के यजमान बहनो को दर्शन तथा आशीर्वाद का सुख प्रदान करने के लिये प.पू. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी। रात्री के भजन सन्ध्यापर वांकानेर के ध्यानी मंडल के भक्तब्रह्मानंद स्वामी के कीर्तन की धारा वहा दी थी। ता. ३-१-१३ को प्रातः सत्र में श्रीमद् भागवत कथा के अन्तर्गत श्रीकृष्ण जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया था। श्रीजी महाराज ने आज से १९० वर्ष पूर्व इसी मूर्ति के सामने शाकोत्सव किया था। जहाँ पर आज के दिन भी शाकोत्सव किया गया था। जिस में शाग बघारने का कार्य प.पू. आचार्य महाराजश्रीने किया था. इस अवसर पर १० हजार जितने भक्त लाभ लिये थे। अन्त में प.पू. महाराजश्रीने सभी को राधाकृषणदेव की निष्ठा दृढता से करने की सलाह दी थी। आगामी गुरु पूर्णिमा मूली में भव्यता के साथ मनाई जायेगी। अन्त में यजमान परिवार के सुपुत्र किशन की बर्थडे भी प.पू. महाराजश्री के सानिध्य में मनाया गया था। रात्रि के सभी कार्यक्रम कलाकार पूरवभाई पटेल तथा मयंक मोदी के द्वारा सम्पन हुआ था।

महोत्सव के पांचवे दिन ता. ४-१-१३ को प्रातः सत्र में त्रिदिनात्मक यज्ञ का प्रारम्भ किया गया था। इस यज्ञ का लाभ भी खेताणी परिवार को मिला था। सभा में बहनो के विभाग में यजमान परिवार के बहनों के आमंत्रण पर प्रत्येक स्थानों से १०० जितनी सां.यो. बहनें सात दिन तक विराजमान थी। इस तरह दोनो समय सुन्दर कथा तथा रात्रि में भव्य सत्संग डायरा का कार्यक्रम होता था। महोत्सव के छठे दिन ५-१-१३ को प्रातः प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से तथा यजमान परिवार के प्रेम के कारण सभी को सुवासिनी भाभी के कंगन का दर्शन हुआ था। यह प्रसंग सभी के लिये अविस्मरणीय है। बहनों की सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री की बड़ी बहन तथा दोनो भांजी भी उस कंगन का दर्शन की थी।

सभा के दूसरे सत्र में प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे, उस समय मांडवराय मंदिर से शोभायात्रा निकाली गयी थी। जिसमें मूली गाँव के क्षत्रिय भक्तोंने

क्षत्रीय वेष धारण करके सेवा का लाभ लिये थे। बाद में प.पू. लालजी महाराजश्री सभा में पधारकर दर्शन-आशीर्वाद का लाभ दिया था। बहनों के विभाग में बहनो की गुरु प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजीने भी खेताणी परिवार को बहनो की दर्शन का लाभ देने पधारी थी। महोत्सव के अन्तिम दिन प्रातः संतो द्वारा श्री राधाकृष्णदेव के यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी थी, बाद में सभा में पधारे थे। सभा में यजमान परिवार को शुभाशीर्वाद प्रदान करके मूर्ति को प्रसाद के रुप में भेंट किया था। अन्त में कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारी गयी थी। ऐसे कार्यक्रम की प्रसंशा करते हुये मूली के महंत स्वामीने श्री राधाकृष्णदेव की कृपा प्रसाद की महिमा वर्णित किया था। सात दिन तक संहिता पाठ के वक्ता सात संत तथा सात ब्राह्मणों का पूजन प.पू. बड़े महाराजश्री के द्वारा किया गया था। इस आयोजन के समय पांचवे दिन सायंकाल के सत्र में कथा के अन्तर्गत रुक्मिणी विवाह का आयोजन किया गया था। जिस में वरपक्ष के यजमान लालजीभाई थे तथा कन्या पक्ष के यजमान श्री रमेशबाई थे।

सातो दिन तक सायंकाल संतो द्वारा व्याख्यान माला का भी आयोजन किया गया था। जिस में पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम), स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी (वांकानेर), स्वा. उत्तमप्रियदासजी (चराडवा), स्वा. बालस्वरुपदासजी (मूली), स्वा. सत्यप्रकासदासजी मूली), स्वा. धर्मवल्लभदासजी (मोरबी), स्वा. निलकंठचरणदासजी (हलवद), इत्यादि संतोने व्याख्यान का लाभ दिया था। इस प्रसंग पर बड़ी संख्या में संत पधारे हुये थे। समग्र आयोजन स्वा. हरिकृष्णदासजी (अमदावदा महंत), स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंत(, स्वा. कृष्णवल्लभदासजी (सुरेन्द्रनगर महंत), स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी (वांकानेर), स्वा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंत(, स्वा. जयकृष्णदासजी, को. व्रजभूषणदास, स्वा बालस्वरुपदास, स्वा. मुकुन्ददासजी, स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. नारायणप्रियदासजी, जे.पी. स्वामी, स्वा. अनिरुद्धदासजी, स्वा. प्रेमवल्लभदासजी, स्वा. सत्यप्रकाशनदासजी, पार्षद प्रवीण भगत, पार्षद चंदु भगत, पार्षद भरत भगत इत्यादि संत-भक्तो के सहयोग से कार्यक्रम सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ था।

इस प्रसंग में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल मूली देश की सेवा सराहनीय थी। सम्पूर्ण महोत्सव में सभा का संचालन स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था।

अपने आगामी उत्सव

माधशुक्ल-१२ शुक्रवार ता. २२-२-२०१३ धरियावद (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

माधशुक्ल-१४ रविवार ता. २४-२-२०१३ वासणा-अमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

माधकृष्ण-२ बुधवार ता. २७-२-२०१३ महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

माधकृष्ण-३ गुरुवार ता. २८-२-२०१३ लींबडी श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

माधकृष्ण-५ शनिवार ता. २-३-२०१३ नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

माधकृष्ण-६ रविवार ता. ३-३-२०१३ मोरबी श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

फाल्गुन शुक्ल-२ बुधवार ता. १३-३-२०१३ चराडवा, मांडवी (कच्छ) तथा भुज श्रीहरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव।

फाल्गुन शुक्ल-३ गुरुवार ता. १४-३-२०१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव एवं श्री स्वामिनारायण म्युजियम का स्थापना दिन।

फाल्गुन शुक्ल-४ शुक्रवार ता. १५-३-२०१३ सापावाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

फाल्गुन शुक्ल-५ शनिवार ता. १६-३-२०१३ कांकरिया (रामबाग) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

फाल्गुन शुक्ल-७ मंगलवार ता. १९-३-२०१३ खाण (राजस्थान) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

फाल्गुन शुक्ल-८ बुधवार ता. २०-३-२०१३ एप्रोच-बापूनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

क्या महाराज को सत्यरुप में प्रसन्न करना है

- जयंतीलाल के. सोनी

इससे पूर्व के लेख में निष्कामधर्म की वात की थी। जो निष्काम वर्तमान का पालन करता है तो उसमें सभी धर्म अपने आप आ जाते हैं। जो सभी धर्म का पालन करे और निष्काम धर्म का पालन न करे तो सभी धर्म चले जाते हैं। इसी सन्दर्भमें एक कहावत है।

संपत्ति का नाश हुआ तो कुछ का नाश नहीं हुआ, स्वास्थ्य का नाश हुआ तो थोड़ा नाश कह लायेगा, लेकिन चारित्र्य का नाश हुआ तो सर्वस्वनाश समझना चाहिये।

''हरिचरित्रामृत सागर'' में स.गु. आधारानंद स्वामीने कहा है कि - ''सत्संग में कभी भी काम बुद्धि का भाव नहीं आने देना चाहिये। अन्यथा इस जीव को नाना भांति योनियों में भटकना पड़ेगा। भगवान तथा भगवान के भक्त में निर्मलभाव हो तो संसार के सुख को उल्टी तथा मलके समान दिखाई देता है। श्रीहरि ने इस सत्संग में ऐसा प्रबन्धकिया है कि स्वप्न में भी पर पुरुष का या परस्त्री का संग हो जाय तो उपवास करना चाहिए। दूसरे ढंग का संबन्धहो तो चार घड़ी भगवान की मूर्ति का ध्यान करते हुये जोर-जोर से भजन करनी चाहिये। जगत में स्त्री एवं धन के लिये लोग नाक कान कटा देते हैं। ब्रह्मवेत्ता पुरुष या ब्रह्मवेत्ता स्त्री यदि एक दूसरे के सहवास में रहने लगती है तो उसके धर्म की रक्षा सम्भव नहीं है। पूर्व के इतिहास में देखा जाय तो ख्याल आयेगा कि हजारो वर्ष तप करने के बाद भी कामवासना के कारण बड़े-बड़े देव तथा ऋषि भी पतित हुये हैं। इसलिये जो श्रीहरि के नियम में अपना व्यवहार करते हैं चाहे वे त्यागी हो या गृही हों, स्त्री हों या पुरुष सभी का संयम बना रहता है। लोया के प्रथम वचनामृत में निर्मानानन्द स्वामीने प्रश्न पूछा कि ''काम को मूल से नष्ट करने की क्या उपाय है। इसके उत्तर में श्रीहरिने कहा कि प्रथम आत्मनिष्ठा दृढ होनी चाहिये द्वितीय आठ प्रकार से ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये भगवान की महिमा को समझकर पंचवर्तमान में दृढता रहने से काम को मूल से उखाडा जा सकता है। ब्रह्मचर्य के नियम में कभी डिगना नहीं चाहिये।

आज वाचनामृत में स.गु. नित्यानंद स्वामीने भी यह प्रश्न पूछा था। ''कामादिक को दूर करने के क्या उपाय है।'' इस प्रश्न के उत्तर में श्रीजी महाराज ने कहा कि कामादिक शत्रु तभी दूर होंगे जब बड़ी निर्दयता के साथ उन्हें दंड दिया जाय, कामोत्तेजित होने पर उसका प्रतिकार करना भी एक उपाय है। जिस तरह धर्मराज पापियों को मारने के लिये रात दिन तैयार रहते है, इसी तरह इन्द्रियां यदि कुमार्ग के रास्ते पर चलें तो इन्द्रियों को दंड दे, इन्द्रियों का दंड उनका दमन हैं। जब अन्तःकरणकुमार्ग पर चले तो उन्हें दंड दे। इन्द्रियो का कृच्छ चान्द्रायण व्रत करके दमन करे, अन्तःकरण को उत्तम विचारों से दंडित करे। तभी कामादिक शत्रुओं का अपने आप नाश हो जायेगा। श्रीहरि की अत्यन्त कृपा से ही सम्प्रदाय के आश्रित भक्तों को काम वासना से बचने के लिये प्रभु दर्शन के लिये स्त्री-पुरुष की अलग व्यवस्था की गयी है। मंदिर में स्त्री पुरुष का स्पर्श न हो इसके लिये उचित व्यवस्था की जाती है। शिक्षापत्री में श्रीहरिने कटु आलोचना की है। उपरोक्त वात से यह समझा जा सकता है कि श्रीजी महाराज को अपने भक्तों के कल्याण की कितनी उत्कट भावना है। क्या अपना वर्तन महाराज के अनुसार है ? यदि न हो तो अपनी भूल को आज से सुधारने का प्रयत्न करना चाहिये। सतत इसकी याद रखनी चाहिये कि पूर्व के बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि भी च्युत हुये है, इसलिये महाराज की आज्ञा मानकर प्रत्येक स्त्री-पुरुष नियम में रहें। महाराज की आज्ञा में अपना जीवन समर्पण करने से खुद जीवन चमक उठेगा। महाराज की आज्ञा में रहने से स्वयं को मजबूत बनाकर मन को हल्का करना चाहिये। संत कहते है कि ''महाराज जब से अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव की स्वहस्ते प्रतिष्ठा की है तब से इस स्थान के आश्रितों के कल्याण का खजाना खुल गया है। जिन्हे कितनी आवश्यकता है वे इस खजाने को लूंटे, अन्यथा जीवन में पछताने के सिवाय हाथ में कुछ नहीं आयेगा।

जैसी है वैसी बात

- अतुलभाई पोथीवाला (अमदावाद)

ज्ञान का भंडार वचनामृत है । श्रीहरिके मुख से निकला हुआ यह वचनामृत है । जिसके श्रवण, मनन, निदिध्यासन करने से श्रीहरि की अलौकिक ध्वनि हृदय में उतर जाती है।

उदाहरण के रुपमे - सं. १८८२ शुक्ल सप्तमी की रात्रि का समय है । जेतलपुर की सभा में श्रीहरि कहते हैं कि''सर्वे सांभड़ो आज तो अमारे जेम छे तेम वात करवी छे'' । श्रीजी महाराजने कहा कि हम जो चाहते हैं वही होता है । क्योंकि हम भगवान श्री नरनारायणदेव ऋषि के रुप में हैं । हमारे पास जो भी महापापी आयेगा उसका सभी पाप हम नष्ट कर देंगे । जो धर्म के नियम में रहेगा उसे हम अन्तकाल में अपने धाम में ले जायेंगे ।

अक्षरधाम के पति पुरुषोत्तम नारायण प्रथम धर्म देव तथा भक्ति से श्री नरनारायणदेव के रुप में प्रगट हुये, वे ही आज भी बद्रिकाश्रम में तप करते रहते है । वे ही नरनारायण ऋषि इस कलियुग में नारायण मुनि के रुप में प्रगट होकर इस सभा में विराजमान रहते हैं । अर्थात् श्रीकृष्ण भगवान जो अक्षरधाम के धामी है वही श्री नरनारायण देव हैं । वेही इस सभा में नित्य विराजमान रहते हैं । अक्षरधाम के अधिपति सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण श्री नरनारायणदेव के स्वरुप में अखंड विराजमान रहते हैं।

इसके अलांवा श्रीहरि कहते हैं कि श्री नरनारायणदेव को हमारा रुप जानकर लाखो रुपये खर्च करके शिखरी मंदिर अमदावाद में बनवाया है - जिस में श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया है । श्री नरनारायणदेव अखंड ब्रह्मांड के राजा हैं।

उसमें भी भरतखंड के विशेष राजा है । ऐसे श्री नरनारायणदेव को छोड़कर जो अन्य देव की उपासना करता है वह व्यभिचारीणी स्त्री की तरह अन्य जारपति का सेवन जैसे है।

इसलिये आप यदि हमारा वचन मांनेगे तो हम जिस धाम से आये है उस धाम में आप सभी को लेजायेंगे । हमारा जो दृढ आश्रय रखेगा उसकी हम सर्व विधरक्षा करेंगे . जो मेरे रीति-नीति के अनुसार, मेरे धर्म का पालन नहीं करेंगे वे महादु:ख को प्राप्त करेंगे ।

श्रीहरिने सभी को जैसी वात थी वैसी समझायी है। हम जो हैं वह प्रत्यक्ष श्री नरनारायणदेव हैं । हमारी आज्ञा के अनुसार दृढ आश्रय रखेंगे तो सर्व सुख प्रदान करेंगे और अन्तिम समय में अक्षरधाम में ले जायेंगे । सत्संग का परित्याग दु:ख का कारण होगा । जिस रुप में हम हैं उसी रुप में भजन-भक्ति से सुख और शान्ति मिलेगी । प्रभु में स्नेह करने से आनंद मिलेगा । आनंदका दूसरा कोई साधन नहीं है । अपनी भावनाओं को प्रभु में लगाना ही सुख है । बार-बार इधर उधर भटकना दु:ख का कारण है । एक निष्ठा भक्ति, एक स्थान पर चित्त को स्थिर करना ही श्रेयष्कर है।

सत्संगी दु:खी होता है, या बिमारी आती है, धन हानि होती है, परिश्रम करने पर भी सुख-शान्ति नहीं मिलती तो उसका कारण यही है कि प्रभु को अच्छी तरह समझा नहीं है।

भगवान स्वामिनारायण में भगवान पना जैसा है वैसा ही है उसमें कोई अन्तर नहीं है । उन्हीं में दृढ आश्रय रखना, उन्ही की आज्ञा में रहना है सभी त्यागी-गृही-नर-नारी के लिये सुखावह है । जो श्री नरनारायणदेव को समर्पित हो गये है उन्हें दु:ख का लेशमात्र भी अहसास नहीं होता, प्रभु स्वयं अपने ऊपर उस दु:ख को लेकर भक्त को सुखिया कर देते है । हम भगवान के हैं भगवान हमारे हैं यह भाव सदा मन में रहना चाहिये ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

भगवान श्री स्वामिनारायण समग्र गुजरात में मुमुक्षुओं के कल्याणार्थ विचरण करते थे । उस समय उन्हें सभी हरिभक्त अनेकों भेट देते थे । कितने धनी हरिभक्त आभूषणभी अर्पण करते थे । स्वर्णाभरण को प्रायः ब्राह्मणों को दान कर देते थे । इसीलिये आचार्य परम्परा में बहुत कम आभूषण मिलता है । उन आभूषणों में से बाजूबन्धकी तस्वीर दिखाई दे रही है । जो म्युजियम के होल नं. १ में रखी गयी है ।

प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से

द्वितीय स्थापना दिन

फाल्गुन शुक्ल-३ ता. १४-३-२०१३ गुरुवार
महापूजा महाभिषेक मुख्य होल में रखा गया है ।
सह यजमान का ११०००/- रुपये तथा ५०००/- रुपये
महापूजा महाभिषेक के यजमान हेतु संपर्क सूत्र
फोन नं. : ०७९-२७४८९५९७
मो. : ९९२५०४२६८६ (दासभाई)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम
टोरेन्ट पावर के पीछे, नारणपुरा, अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि डिसेम्बर-२०१२

रु. २११११/- धनराज डेवलोपर्स, गांधीनगर कृते हरिकेशवदासजी।
रु. २१०००/- पटेल करशनभाई माधाभाई कृते शान्ताबहन, बिलियां।
रु. १५०००/- धर्मकुल आश्रित धर्मप्रेमी एक हरिभक्त, अमदावाद।
रु. ११११५/- झाला भरतसिंह बालुभा समला (मूलीदेश)।
रु. ११०००/- बलोल (भाल) गाँव के हरिभक्तों के तरफ से गंगा पूजन अशोकभाई परमार।
रु. ११०००/- मनीषभाई नटवरभाई पटेल कृते कलाबहन।
रु. ११०००/- धीरजभाई के. पटेल, अमदावाद।
रु. ११०००/- माणेकलाल एन. पटेल राजपुरवाला।
रु. ५००१/- डॉ. कांतिभाई एन. पटेल, मुंबई।
रु. ५००१/- जेठाभाई लालदास डांगरवा प्रवीणभाई, भरतभाई।
रु. ५०००/- परसोत्तमभाई हरजीभाई, नडीयाद।
रु. ५०००/- नरसी कुंवरजी मारवी (जीरागढ-सुरत)।
रु. ५०००/- पटेल विष्णुभाई एच. कलोल।
रु. ५०००/- कल्याणभाई नारायणभाई पटेल, कडी।
रु. ५०००/- डॉ. रमेशभाई चुनीलाल गुसाणी।
रु. ५०००/- पटेल वर्षाबहन गोविंदभाई, सडासणा।
रु. ५०००/- मीनाबहन सुरेशभाई जवेरी, मुंबई
रु. ५०००/- दिनेशभाई के. भगत कृते अमीषबाई, अमदावाद।
रु. ५०००/- केशवलाल शंकरदास पटेल, लांधणज।
रु. ५०००/- रमेशभाई तुलसीभाई चोटलिया, धूलकोट-सुरत।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (डिसेम्बर-२०१२)

ता. १-१-१३ बाबुलाल त्रिकमलाल ठक्कर, विरमगाँव।
ता. १०-१-१३ राजूभाई कान्तिभाई पटेल, डांगरवावाला तथा घनश्यामभाई पटेल कृते पी.पी. स्वामी (छोटे)
ता. १३-१-१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर महिला मंडल कृते शा.स्वामी विश्वस्वरुपदासजी, कपडवंज।
ता. २०-१-१३ मनोजकुमार अमृतलाल मिस्त्री, नवावाडज।
ता. २३-१-१३ इन्द्रवदन रावजीभाई पटेल, नारणपुरा।
ता. २४-१-१३ श्रीजी एन्टरप्राइज - नाईरोबी कृते हरेशभाई व्रजलालभाई सोनी, विनोदभाई वालजीभाई, सधुसूदन जयंतीभाई नरेशकुमार जयंतीभाई।

प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में श्री नरनारायण देव की महिमा बताते हुये कोलर ट्यून (वोडाफोन धारण करने वाले) अपने मोबाईल में चालू करने के लिये सी.टी. नाम महाराज जी सी.टी. कोड २७०९३०

Caller Tune Name : Maharaj ji
Caller Tune Code : 270930

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सत्संग से एकता रही है

(शास्त्री हरिप्रियादसजी, गांधीनगर)

बडे भाग्य से मनुष्य शरीर मिला है । भगवान की असीम कृपा है । इसी लिये मनुष्य का अवतार मिला । मनुष्य के अलांवा अन्य जीव सृष्टि में भी बहुत कुछ है । आहार, निद्रा, भय, इत्यादि समान है । लेकिन मनुष्य की तरह बुद्धि नहीं होती । इसी लिये तो उसे पशु कहा जाता है । जिस मनुष्य में बुद्धि न हो उसे भी पशु की उपमा दी जाती है । जब मनुष्य देह मिली है तो धर्म के नाम पर झगड़ा त्याग कर भजन-भक्ति करके जिन्दगी को धन्य बनानी चाहिये । इसे समझने के लिये अधो निर्दिष्ट लेख का वांचन करें - प्रकृति के गोंद में पर्वतों से घिरे हुये जिसके बगल से नदी एवं झरना बहता था ऐसे गाँव में नाना जाति के लोग रहते थे । जहाँ पर मनुष्य रहते हैं वहाँ सब कुछ रहता है । बजार, मंदिर, पर्यटन स्थल, घर, हवेली, झूपडी इत्यादि । उस गाँव में आठ-दश सुखी कुटुम्ब भी रहता था । खुब संस्कारी एवं इज्जतदार परिवार था । घर के बड़े राधेश्यामजी थे । उनकी पत्नी मंगला बा थी । ज्येष्ठ पुत्र ज्येष्ठजित तथा पुत्र वधू कुमुद थी । बाकी लोग छोटे-छोटे थे । अभ्यास करते थे ।

शेठ राधेश्यामजी की पीढी थी । गाँव में तथा गाँव के बाहर भी उनका माल जाता था । वे भी बाहर से माल लाकर गाँव में बेचते थे । प्रतिष्ठित व्यक्ति थे । सुख शान्ति वाला जीवन था । गाँव में सभी संस्कारी नहीं होते । ईर्ष्यालु भी होते है । शेठ राधेश्यामजी धार्मिक प्रवृत्ति एवं उदारवृत्तिवाले थे । गरीबों की सहायता करने में भाव रखते थे । आवश्यकता के अनुसार सहायता भी करते थे । इससे उनकी प्रतिष्ठा बनी रहती ।

गाँव के अन्य व्यापारियों को उनकी वाहवाही अच्छी नहीं लगती थी । शेठ राघेश्याम के घर में अशान्ति तथा कलह पैदा हो ऐसा सोचते थे । संयोग से उस गाँव में एक ऐसी माहिलाथी जो षडयंत्र में बड़ी निपुड़ थी । उस गाँव के ईर्ष्यालु व्यापारी मिलकर उस महिला को धन का लालच देकर उससे कहे कि तुम ऐसी उपाय करो कि सास-बहू, पति-पत्नी आपस में ईर्ष्या - झगड़ा करने लगें । वह महिला पैसे के लालच में कार्य करने के लिये तैयार हो गयी ।

एकदिन शेठ के घर के आसपास घूंमकर उनके घर की प्रवृत्ति जान ली । उसने देखा कि शेठ का बड़ा लड़का भगवान शिव का परम भक्त है और उसकी पत्नी कृष्ण की उपासक है । अब दोनों में झगड़ा लगाना सरल हो जायेगा । वह प्रतिदिन कृष्ण के मंदिर में जाती और मायावी महिला भी उस मंदिर में जाकर मिलती । दोनो मित्रवनगयीं । अब मायावी महिला प्रतिदिन एक ही वात उसके कान में भरती कि तुम बड़ी अच्छी हो जो भगवान श्रीकृष्ण की भक्ता हो, तुम्हारा पति पता नहीं कहाँ से शिव का भक्त हो गया, जिस शिव के पास रहने का घर नहीं पहनने के कपड़े नहीं, अलंकार में सांप-बिच्छु धारण करते हैं, स्मशान में रहते हैं, स्मशान की राख शरीर में लगाते हैं । हमारे पति ऐसा करें तो हम कभी ऐसा चलावे नहीं । यह सुनकर ज्येष्ठजित की पत्नी प्रतिदिन भगवान शिव को भलाबुरा कहकर झगडने लगी । अब उस मायावी महिला की चाल सार्थक हो गयी । इस तरह दोनो पति - पत्नी में यदा कदा झगड़ा होने लगा ।

एकदिन दोनो का झगड़ा पराकाष्ठा पर पहुँच गया । उसी समय उस गाँव में शांतिनाथ नामके एक वितरागी महात्मा आये हुये थे । गाँव के रामजी मंदिर में ठहरे हुये थे । प्रातः सायम् गाँव में घूम आते । सायंकाल मंदिर में दर्शन के लिये आने वाले भक्तों को कथा-प्रवचन सुनाने । गाँव के भक्त उनके चरण में कुछ भेंट रखते, उसी से

उनका खर्च चलता । संयोगवश महात्माजी का उसी समय शेठजी के दरवाजे से निकलना हुआ जब दोनो पति-पत्नी आपस में लड़ रहे थे । झगड़े की आवाज सुनकर महात्माजी दरवाजे के सामने खड़े हो गये । पति की आवाज में सुने कि तूं रोज अब झगड़ा करती है इस लिये मैं घर छोड़कर काशी जाकर भगवान शिवका साक्षात्कार करुँगा । मेरे जाने के बाद तुम्हे खबर पड़ेगी कि कैसा दु:ख होता है । दु:खी हो जाओंगी । पत्नी की आवाज में सुने कि मैं भी इस घर में अब नहीं रहूँगी । मैने भी निर्णय कर लिया है कि वृन्दावन जाकर रहूँगी । मीरा-राधा की तरह भगवान की भक्ति करुँगी । मेरे जाने के बाद खबर पड़ेगी कि पत्नी के विना घर स्मशान जैसा होता है या नहीं । महात्माजी ने यह सब सुनकर विचार किया कि ये दोनो निश्चित ही अच्छे संस्कारी है, इनका घर उजड़ने से रोकना चाहिये । अभी थोड़े प्रयाश से कार्यलाभ हो जायेगा । महात्माजी दरवाजे के पास जाकर दरवाजा खटखटाये, दोनो बाहर आये । दोनो से कहने लगे कि आपकी पूरी बात मैने सुनली है । अब आपदोनो मेरी वात सुनो ।

आप दोनो संस्कारी है, इसलिये झगड़े में भी काशी-वृन्दावन जाने का विचार किये । आप दोनो की धार्मिक भावना सुनकर ही मेरे मन में आप दोनो से वात करने की इच्छा हुई । आप दोनो काशीवृन्दावन जाकर जो शान्ति प्राप्त करना चाहते हो वह आप दोनो इसी घर में एकता और सद्भावना के साथ रहोगे तो निश्चित ही काशीवृन्दावन यहीं हो जायेगा और शान्तिमय जीवन जीपाओगे । यदि आप में एकता तथा सद्भावना नहीं रहेगी तो वहाँ जाने पर भी मन अशान्त रहेगा और दूसरे के साथ झगड़ते रहोंगे । भगवान शिव तथा भगवान कृष्ण दोनो एक ही है दोनो में भेद मानना ही मूर्खता है और अशान्ति का कारण है भेद भूलकर भजन-भक्ति करो । महात्माजी की यह वात सुनकर दोनो में असर हुई । मत-मतान्तर छोड़कर-एक दूसरे के पैर परगिरकर माफी मांगे और मायावी महिला की मायाजाल से बाहर निकल कर महात्माजी की आज्ञामाने जिससे पुन: जीवन सुखी हो गया ।

मित्रो ! यह वात सभी के लिये प्रेरणादायी है । स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में भी कहा है कि ''नारायण तथा शिव को एकात्मभाव से जानना'' । अपने इष्टदेव में श्रद्धा रखना उसी का आश्रय रखना लेकिन श्रद्धा सभी में रखने से जीवन में कल्याण होगा । कभी भी किसी देवी-देवता की निन्दा नहीं करनी चीहिये, घर में एकता रखकर भगवान की भजन भक्ति करनी चाहिये । इससे भवान का घर में निवास होता है । धर्म रसायन कहा गया है । यह औषधिजिसके घर में है वहाँ शांति-आनन्द की प्राप्ति होती है ।

●

सभी को राजा होना है

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

कोई तपस्वी असामान्य तप कर रहे थे । सभी तो शीर्षासन से तप करते है लेकिन वे महात्मा सुपारी पर माथा रखकर तप कर रहे थे । उनकी प्रतिष्ठा पूरे देश में फैल गयी । क्या तपस्वी है ? हजारो लोग पैर छूने लगे । तपस्वी की साधना देश के हित में होती है । इस भावना से राजा उस तपस्वी के यहाँ जाकर चरण स्पर्श किया । राजाने देखा कि तपस्वी इतनी कठिन तपस्या कर रहा है तो उसका हृदय द्रवित हो गया । विन्ती करने लगा कि ऐसी कठिन तपस्या करने की क्या जरुरत ? तपस्वी ने कहा कि यह तपस्या मैं भगवान को प्रसन्न करके राजा बनने के लिये कर रहा हूँ । यह सुनकर राजा ने कहा कि मैं राजा हूँ, फिर भी दु:खी हूँ । समस्याओं का कोई अन्त नहीं है । आप उसी समस्या को मस्तक पर लेने के लिये तप कर रहे हैं । जीव का कभी कोई संकल्प पूर्ण नहीं होता । वह सदा अधूरा ही रहता है । जब कि परमात्मा का सभी संकल्प पूर्ण होता है । श्रुति भी कहती है - ''सत्यकाम: सत्य संकल्प:'' लेकिन जीवात्मा के महत्वांकांक्षा का कभी अन्त नहीं होता । इस तरह जीव का संकल्प कभी पूरा नहीं होता । अनन्त चाहनायें होती रहती है । यही जीव का स्वभाव है । अपनी इच्छा की पूर्ति के लिये नानाविधप्रयत्न करता रहता है । कुछ पाने की सदा चाहना बनी रहती है । चाहना ही दु:ख का कारण है । पाठ-व्रत, दान, तप योग यह सब भगवान की प्रसन्नता के लिये है । लेकिन उस प्रसन्नता में भी जीव कुछ चाहना तो रखता ही है । जीव सदा अपूर्ण है । मात्र परमात्मांही पूर्ण हैं । उन्हीं की कृपा से उनके भक्त पूर्ण धाम हो जाते हैं । इसलिये भगवान का एकनाम मंगलकारी भी है ।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"हम भगवान को मानते है लेकिन भगवान का नहीं मानते"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम भगवान के मंदिर में जाते हैं तो उस मंदिर में उत्सव हो या आरती का समय हो खूब भीड़ होती है। अर्थात् जो लोग मंदिर में आते हैं वे सभी भगवान को मानते हैं। परंतु इस आनेवाली भीड़ में भगवान के मानने वालों की संख्या बहुत कम होती हैं। जो लोग भगवान को सच्चे दिल से मानते हैं, उन्हें परमात्मा के वचन या आज्ञा पालने में विश्वास होता है। ऐसे लोग परमात्मा की आज्ञा का पालनभी करते हैं। परंतु हम परमात्मा की आज्ञा का पालन नहीं करते, बल्कि परमात्मा की फरियाद अवश्य करते हैं और कहते भी हैं कि हम सदा दु:खी क्यों रहते हैं। हम अपने शर्त के ऊपर धर्म का पालन कते हैं। हम अपनी व्यवस्था के अनुसार धर्म का पालन कतरे हैं। हम परमात्मा के नियम के अनुसार धर्म का पालन करते हैं। यदि हम अपने स्वतंत्र नियम के अनुसार जीवन का व्यवहार करेंगे तो उसे सच्ची शरणागति नहीं कही जायेगी। इसलिये हमें अपने नियम के अनुसार नहीं बल्कि परमात्मा के बनाये नियम के अनुसार जीवन का व्यवहार करना चाहिये। श्रीहरि की आज्ञा का पालन करना है। यदि राजापरिक्षित का सात दिन में कल्याण हो सकता है तो क्या हमारा कल्याण नहीं हो सकता ? इसके लिये अन्तर से सभी में वैराग्य का भाव आना आवश्यक है। अपने भीतर कमियों को दूर करना होगा। परन्तु हम अपने भीतर की कमी विना देखे दूसरों पर आरोप लगाते हैं। यहाँ तक भगवानको भी दोषित करते रहते हैं। भगवान हमें दु:खी करते हैं, भगवान की कृपा नहीं है। परमात्मा कभी किसी को दु:खी नहीं करते। परमात्मा भी भेद भाव नहीं रखते। यह समझने लायक वात है। दोष हम में हैं। संसार सभी जगहों से खराब हैं। संसार में दोष ही दोष है। माया का खेल हैं। माया के वश होकर सभी गलत कर्म करते हैं और उसी किये हुए कर्म के अनुसार फल पाते हैं, लेकिन दोष अन्य को या परमात्मा को देते हैं। परमात्मा को पाने के लिये यह संसार मिला है। उसमें भी मनुष्य शरीर मिली है। हमारी भूल है कि हम जगत की तरफ देखते हैं, परमात्मा की तरफ नहीं देखते। यही हमारी अज्ञानता है। यही हमारा दोष है। यही हमारी भूल है। प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य को करे तो भूल नहीं होगी, दोष नहीं होगा। उसके लिये दो विकल्प है। एक तो यह कि परिस्थिति को बदलना होगा या दूसरे की परिस्थिति के अनुकूल होना होगा। यदि हम जिस परिस्थिति में हैं उसे बदलने जायेंगे तो ९०% सम्भव नहीं होगा। इससे अधिक दु:खी होने की सम्भावना है। इसकी अपेक्षा शरणागति अर्थात् परिस्थित के अनुकूल हो जाना। इसके लिये क्या करना होगा ? ऐसा मान लेना कि जो कुछ मेरे जीवन में है वह श्री नरनारायणदेव की कृपा से है। और जो कुछ दु:ख है वह हमारे स्वभाव के कारण है। बाहर का शत्रु परेशान करे तो शरीर में चोट लगती है और अन्दर का शत्रु हेरान करे तो आत्मा को चोट लगती है। इसके लिये अन्त:करण को शुद्ध रखना चाहिये। इसके लिये क्या करना होगा ? तो जिस तरह सागर को पार करने के लिये नाव की जरुरत होती है ठीक उसी तरह संसार सागर को पार करने के लिये इस शरीर की जरुरत होती है। जिस तरह नाव खराब हो तो सागर पार नही कर सकते और बीच में ही डूब जायेंगे। इसी तरह शरीर में विषय वासना भरे रहने पर संसार सागर भी पार नहीं कर सकते। इस के लिये क्या करना चाहिये ? जिस तरह नाव में बिल हो गयी हो तो पानी भी तर आयेगा और आत्म रक्षा के लिये परमात्मा की एकमात्र शरण स्वीकारनी पड़ती है, इसके साथ ही कर्म भी करना पड़ता है। वह कर्म यह कि जितने यात्री बैठे है सभी पानी उलेचने लगते है। इस तरह बचने की पूरी

सम्भावना रहती है और नाव भी धीरे धीरे किनारे आ सकती है। इसी तरह भक्ति और कर्म दोनो साथ-साथ होगा तो निश्चित ही कल्याण सम्भव है। इसी तरह आत्मचिन्त करके अपने भीतर के सभी अवगुणों को धीरे-धीरे बाहर निकालना है। इसी तरह करते रहने से भगवान की आज्ञा का पालन होगा और आत्म कल्याण निश्चित है। परमात्माकी आज्ञा का पालन करना ही भव सागर पार करने की बात है। सब कुछ स्वीकार करके भगवान में श्रद्धा रखकर आत्मचिन्तन करते रहना चाहिये। ज्ञात-अज्ञात में कोई खराब कर्म हो गया हो तो क्षमा याचना करनी चाहिये।

इसी तरह प्रतिदिन का क्रम बनाना चाहिये। खराब कर्म करने का उद्देश्य नहीं होता फिर भी हो जाता है। भगवान बड़े दयालु हैं सभी का पोषण करते हैं। सभी को माफ कर देते हैं। आप सभी का सत्संग खूब बढे ऐसी भगवान श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

●

विदुर नीति

- सां.यो. कंचनबा (ध्रांगध्रा)

भगवान स्वामिनारायण हम सभी के लिये बहुत प्रयत्न किये है। तत्कालीन संतो को गाँव-गाँव भेंजकर सभी को सत्संग के मार्ग पर लगाया। सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण, भक्तचिंतामणी जैसे शास्त्रों की रचना करवाये। अमृतवाणी रुपी सागर का संग्रह ''वचनामृत २७३'' संतो से तैयार करवाये इन सभी से यदि कुछ रह गया तो सर्व विधसभी के कल्याण हेतु शिक्षापत्री ग्रंथ का स्वयं निर्माण किये। जिस शिक्षापत्री में विष्णुसहस्त्रनाम, भगवद गीता, विदुरनीति को अपना प्रिय शास्त्र बताया है। सभी को वांचने की आज्ञा भी किये हैं। विदुरनीति हम सभी के लिये बहुत उपयोगी है। व्यावहारिक जीवन में विदुरनीति बहुत कारगत सिद्ध हुई है। गुप्त मंत्रणा किसके साथ नहीं करना चाहिये -

जैसे - (१) जिसके पास कम बुद्धि हो, (२) दीर्घ सूत्री।(३) क्षणभर में भाव विभोर होने वाला।(४) जो स्वयं अपनी बड़ाई करता हो।

अधोनिर्दिष्ट चार वस्तुयें तुरंत फल देने वाली होती है। देवों का संकल्प तुरंत फल देता है। देवों का संकल्प अर्थात् शुभ कंकल्प। दूसरा महापुरुषों का तप जल्दी फल देता है। कारण यह कि वे परमार्थ के लिये तप करते हैं। तीसरा गुरु के पास जो विनीत रहता है उसे सद्य: फल की प्राप्ति होती है। चौथा पापियों के नाश करने से भी तुरंत फल मिलता है। अर्थात् पापमय आचरण या अनिष्ट विचारों का नाश।

ग्रहस्थाश्रमी अपने बड़ो में श्रद्धा रखें।

वृद्ध तीन प्रकार के बताये गये हैं - वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध। जो इस तरह करेगा वह संसार में कहीं भी पीछे नहीं रहेगा।

इसके अलांवा मौन, शास्त्र का अध्ययन, यज्ञ तथा अग्नि होत्र इन चारों को या चार में से एक को भी जो अपने जीवन में उतारता है उनके जीवन में कभी कोई हानि नहीं होती। इन उपरोक्त विचारो में जिसकी शुभ निष्ठा नहीं होगी उन्हें लाभ नहीं मिलेगा, हानि होगी। ब्रह्मानंद स्वामी ने लिखा है कि - इसी लिये तो विदुर नीति का भाषांतर किया हूँ। विदुरनीति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होती है।

अलग-अलग हजारों काम करें तो काम किया हुआ कहा जायेगा। लेकिन एक ही काम को हजार वार करें तो वह कार्य सिद्ध कहा जायेगा।

●

धर्म की गति न्यारी

- लाभुबहन मनुबाई पटेल (कुंडाल-कडी)

संसार कर्माधीन कहा गया है। जो जैसे करता है वह वैसा पाता है। कोई किसी को न सुख देता है, न दु:ख देता है। स्वयं किये हुए कर्म का फल वह व्यक्ति भोगता है। वनवास की प्रथम रात्रि में भगवान राम लक्ष्मण से कहते हैं कि ''नहि कोई सुख दु:ख कर दाता। निजकृत कर्म भोग सुन भ्राता'' भगवान राम दशरथ के पुत्र सीता जनकराजा की पुत्री तथा दशरथ की पुत्र बधू तो भी आज उन्हें वन-वन विचरण करना पड रहा है और शयन के लिये जहाँ वे मखमल के गद्दे पर सोती थी वहीं आज घारसफूस पर सो रही है। यह कर्म फल है या कुछ अन्य ? यह सभी पूर्व का संचित है, जिसे इस जन्म में कर्म फल भोगने के लिये प्राप्त हुआ है।

अपने जीवन में भी ऐसा लगता है कि यह व्यक्ति हमें बड़ी पीड़ा (दुःख) दिया है। लेकिन ऐसा नहीं है वह एक निमित्त मात्र है, जब कि हमारा पूर्व का संचित कर्म वैसा करवा रहा है। जब शुभ यश मिलता है तो स्वयं का किया हुआ मानता है इसी तरह जब उसे अपयश या दुःख मिलता है तो दूसरे को दोषित करता है। इसलिये संत सुख-दुःख में समानरुप रहते हैं।

सुख और दुःख इस जन्म में पूर्वनज्म का परिपाक है। अर्थात् जो पूर्वजन्म में किये है वही इस जन्म में मिल रहा है। इसलिये दूसरे को दोषित करना निरर्थक है। रामावतार में राम सात ताड़ के वृक्ष के पीछे छिपकर बालीका बधकरते हैं। वही बाली श्रीकृष्णावतार में अनजान में ही श्रीकृष्ण के पैर में बाण मारता है। यही कर्म का फल है।

महाभारत के युद्ध में धृतराष्ट्र के १०० पुत्र एक साथ मारे जाते हैं। इस विषय पर धृतराष्ट्र भगवान श्री कृष्ण से प्रश्न करता है कि हे अच्युत ? इस जन्म में मैंने ऐसे कोई पाप नहीं किये थे, फिर भी मेरे १०० पुत्र मारे गये। इसका क्या कारण ? इसके उत्तर में भगवान कहते है कि, आज से ५० जन्म पूर्व आप बहेलिया थे। एकवार आप पक्षियों को पकड़ने के लिये वृक्ष पर बैठे पक्षियों पर जलते हुये जाल को फेंके। उस जलते हुये जाल से कितने पक्षी मर गये। उस पाप का फल पड़ा रहा और आप का पुण्य अधिक होने से आप उस कर्म के फल उस समय नहीं इस जन्म में प्राप्त किये और अन्धे हुये, पुण्य के फल अनुसार १०० पुत्र प्राप्त किये लेकिन पक्षियों के जलने रुप जो पाप था उसका भी फल १०० पुत्र की प्राप्ति के बाद भी वे नष्ट हो गये। यही कर्म की गति है-कर्म की गती न्यारी है।

●

अनोखा भव्य उत्सव

- जानकी निकी कुमार पटेल (गुलाबपुरा)

सत्संग में विचरण करते हुए श्रीहरि कारियाणी पधारे। श्रीहरि के साथ दादा खाचर तथा उनकी दोनो बहने भी थी। पंचाला से हेमंतसिंह दरबार श्रीहरि को लेने आये। उस समय श्रीहरि कुछ बड़े महानुभावों के साथ तथा संतो के साथ बिराजमान थे। दरबार आकर प्रार्थना किये। हे प्रभु ! जुनागढ के हरिभक्त आपका दर्शन करना चाहते हैं। इसलिये आप पंचाला पधारिये। श्रीहरि अपनी अभिव्यक्ति करना चाहते थे कि दादा खाचर की दोनो बहनोने भी गढडा पधारने की विन्ती करदी। उसी समय लोया से सुरा खाचर आ पहुँचे, वे भी अपने यहाँ पधारने की विन्ती किये और कहे कि मेरी पत्नी ने कहा है कि महाराज यदि न आवे तो आप भी उन्ही के साथ साधु बनकर रहिये गा, लेकिन लिये विना आइयेगा नहीं। संतो के साथ विचारणा करके पहले गढडा फिर लोया उसके बाद पंचाला इस तरह तीनो स्थानो के भक्तों को दर्शन का सुख दिये।

जब लोया पहुँचे तो सुराखाचर से कहे कि यहाँ पर शाकोत्सव करना है और वहीं से शाकोत्सव का कार्य आरंभ हुआ और आज भी विशेष रुप से मनाया जाता है। ताजे-ताजे भंटे को खेतों से तोड़वाकर दिव्य शाकोत्सव मनाया गया। इस शाकोत्सव में सभी हरिभक्त अपने घरों से हर्दी, मर्चा, नमक, जीरा, लविंग, तेजपत्ता, इत्यादि वघारने की सामान ले आये। मसाला भी भक्त अपने घर से ले आये अब बड़े वर्तन में (कडाही) में श्रीहरि श्वेताम्बर धारण करके बघार करते हैं, वह दिव्य शोभा देखने योग्य थी सभी श्रीहरि के उस रुप को देखकर जीवन को धन्य मान रहे थे।

शाकोत्सव के निमित सुराखाचर ने मिष्ठान्न तथा पूड़ी बनवाये। श्रीहरि के आज्ञानुसार संत हरि भक्त पंक्ति लगाकर भोजन के लिये बैठ गये।

महाराज स्वयं कमर में डुपट्टा बांधकर भोजन परसने लगे। सभी संत-हरिभक्त को आग्रह पूर्वक भौजन करवाये।

इस तरह शाकोत्सव नामक एक विशिष्ट उत्सव उस समय महाराज ने सत्संग में प्रचारित किया जो आज भी आनन्द की धारा सुखः और शान्ति को देने वाला हो गया है। यह शाकोत्सव अन्य जितने उत्सव - (अन्नकूटोत्सव, पुष्प दोलोत्सव वसन्तोत्सव) इत्यादि होते है वैसे ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। अन्यत्र शाकोत्सव की परम्परा नहीं है। मात्र अपने सप्रदाय में यह मनाया जाता है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद कालुपुर मंदिर जीर्णोद्धार तथा सुवर्ण सिंहासन में सेवा करने का अमूल्य अवसर है

श्रीनरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री के आशीर्वाद से अहमदाबाद में संप्रदाय के प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में जीर्णोद्धार तथा तीनो शिखरी देवो का अलौकिक सुवर्ण सिंहासन का निर्माण कार्य चालु है। हरिभक्तों को ऐसी देव सेवा करने का अनमोल अवसर प्राप्त हुआ है। तो अवश्य सेवा करके जीवन कृतार्थ करके धन्य हो जाओ। (महंत स्वामी, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अमदावाद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर

ऐतिहासिक तथा धार्मिक नगर वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से पवित्र धनुर्मास में प्रातः ५-३० से ६-३० दैनिक प्रभात फेरी महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी के मार्गदर्शन अनुसार नगर के मानोर, कापड़ बाजार, बारोटी बाजार, गोलवाजे, अर्जुन बारी, नागधरो, अटारो, धांत कोल दरवाजो, हाटकेश्वर परा विस्तार, भावसार होल, काला वासुदेव आचरे, पंड्या शेरी आदि विस्तार में प्रभात फेरी महामंत्र धुन के साथ मंदिर ७-०० बजे तक लौटी तब ७-०० बजे मंदिर में धून करके शिंगार आरती के बाद सभा में शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी के वक्तापद पर वचनामृत की कथावार्ता का लाभ हरिभक्तोंने लिया। ता. २५-१२-१२ को प्रसादी के नागधर पर ''खीचडी कढी''के प्रसाद के साथ सत्संग का कार्यक्रम किया गया। जिस में १५०० हरिभक्तों ने भाग लिया। महंत शा. नारायणवल्लभदासजी तथा विश्वप्रकाशदासजीने कथा वार्ता करके हरिभक्तों को कथारसका पान करवाया। श्री वाडीलाल मोदी तथा श्री कालीदास जे. पटेल ने प्रभात फेरी में मधुर स्वर के साथ धून बुलवायी। (भीखाभाई एम. वालंद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा शा.स्वा. आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में धनुर्मास में प्रातः ठाकुरजी के समक्ष संतो तथा हरिभक्तों के द्वारा श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गई। ता. ३१-१२-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री धुन प्रसंग पर पधारे थे। समस्त हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये। इस प्रसंग पर हरिभक्तों को प्रसाद दिया गया। धुन में शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासने धुन करवायी बाद में कालुपुर श्री नरनारायणदेव के दर्शन के लिये संत हरिभक्तों ने पदयात्रा का आयोजन किया। उत्तरायण के दिन संतो द्वारा कथा का लाभ तथा पुजारी देव स्वामीने ठाकुरजी का सुंदर श्रृंगार करके दर्शन का लाभ करवाये। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, कांकरिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. महंत शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) की प्रेरणा से अ.नि.प.भ. जयंतीभाई प्रहलादभाई पटेल (डांगरवावाले) के स्मरण हेतु उनके परिवार की तरफ से श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण स.गु.शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। इस प्रसंग पर स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, विश्वविहारी स्वामी, भंडारी स्वामी, सूर्यप्रकाशदासजी तथा श्रीवल्लभ स्वामी आदि संतोने पधारकर यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये। शा.कुंजविहारीदासजी सहिंता पाठ में बिराजमान थे। शा.विश्वप्रकाशदास तथा स्वा. माधवप्रियदासने प्रसंगोचित प्रवचन किया। प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। शा. व्रजभूषणदासजी तथा बालु स्वामीने सुंदर आयोजन किया था। (विष्णुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर २३ वाँ पाटोत्सव-शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (ईडर) तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिजीवनदासजी की प्रेरणा से हिंमतनगर मंदिर में बिराजमान बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का २३ वाँ पाटोत्सव मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष-६ को धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ता. १८-१२-१२ को पधारे थे । उनके वरद् हाथों से महाराज का षोडशोपचार अभिषेक विधिकी गई ।

यजमान जेठवा ईश्वरभाई के सुपुत्र जगदीशभाई (सलाल)ने महापूजा तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के पूजा का लाभ लिया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री यजमानश्री के घर अल्पाहार करके लक्ष्मीनारायण सोसायटी के हरि मंदिर का प्रथम पाटोत्सव करके अन्नकूट की आरती की । इस प्रसंग पर ईडर, टोरड़ा, शोकली, माणसा, अहमदावाद, लालोडा, प्रांतिज तथा पुजारी अभयप्रकाशदासजी तथा ईडर, सोकली तथा नाथद्वारा के संतोने पाटोत्सव में पूर्ण सहकार दिया ।

(अरविंदभाई टांक)

शाकोत्सव - धनुर्मास धुन

श्री स्वामिनारायण मंदिर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर ईडर से शा.पी.पी. स्वामी, शा. कुंजविहारी स्वामी, सत्यसंकल्प स्वामी तथा हिंमतनगर के महंत स्वामी आदि संतोने शाकोत्सव का माहात्म्य कहा ।

पवित्र धनुर्मास में प्रातः महामंत्र धुन के बाद महंत शा.स्वा. हरिजीवनदासजी द्वारा श्री पुरुषोत्तमप्रकाशकी कथा कही । पुजारी स्वामी अजयप्रकाशदासजीने ठाकुरजी का सुंदर श्रृंगार किया । उत्तरायण पर मंदिर को पतंगो से सजाया गया था । ठाकुरजी की समूह आरती हुई । श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की । (कनुभाई पटेल)

हीरावाडी में प्रथम भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा स.गु.शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा मार्गदर्शन से ता. १२-१-१३ को हीरावाडी में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा भव्य शाकोत्सव मनाया गया ।

हीरावाडी के समस्त सत्संग समाज के सहयोग से सुंदर शाकोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ । सभा में एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी तथा स्वामी हरिकृष्णदासजीने शाकोत्सव की महिमा कहा । सेवाभावी हरिभक्तों का सन्मान प.पू. बड़े महाराजश्रीने किया । बाल मंडल के बच्चों के लिए एक सुपर कीट उमंद का विमोचन प.पू. बड़े महाराजश्रीने किया था । अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये । इस प्रसंग में योगी स्वामी, जे.पी. स्वामी, विश्वविहारी स्वामी, मादळ स्वामी, आदि संतगण पधारे ।

समग्र आयोजन का संचालन स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था । १५०० जितने भाविक भक्तों ने शाकोत्सव का लाभ लिया था ।

(महेन्द्रभाई पटेल, हिरावाडी)

प्रसादीभूत मोटेरा गाँव श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य नवान्ह (रात्रीय) पारायण-शाकोत्सव मनाया गया

मोटेरा गाँव जहाँ श्रीहरि १० बार पधारे थे उस गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से ता. २२-१२-१२ से ता. ३०-१२-१२ तक श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य नवान्ह (रात्रीय) पारायण (क्रमश) स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने की । इस कथा के चोथे वर्ष शि. श्लोक ८६ से १२१ श्लोक तक कथा की । जिसके मुख्य यजमान अ.नि. नटवरभाई रामदास पंचाल, नारणभाई रामदास पंचाल तथा चंदुभाई रामदास पंचाल परिवार थे । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । इस प्रसंग में स.गु.महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर), स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारणघाट) आदि संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद दिये । समग्र आयोजन में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । समग्र आयोजन का संचालन स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था । (श्री न.ना.देव युवक मंडल, मोटेरा)

पोर गाँव में (जी. गांधीनगर) पंचान्ह विदुर नीति पारायण

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर), स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. महंत शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (नाराटणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से गांधीनगर जिले के पोर गाँव में ता. १९-१२-१२ से ता. २३-१२-१२ तक पंच दिनात्मक श्री विदुरनीति पारायण कथा धूमधाम से सम्पन्न हुई ।

समग्र पारायण के यजमान पद पर प.भ. रमणभाई चतुरभाई पटेल परिवार ह. विक्रमभाई, सुमनभाई, राजुबाई आदिने उनके मातुश्री अ.नि. जीजीबहन रमणभाई पटेल के स्मरणहेतु पारायण का यजमान बनकर लाभ लिया । पारायण के वक्ताद पर स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी बिराजमान होकर पोर तथा आसपास के गाँव के हजारो मुमुक्षुओ को देव दुर्लभ कथा का पान करवाया ।

इस प्रसंग पर समस्त बहनो को दर्शन देने हेतु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी । पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । कथा की पूर्णाहुति की आरती करके यजमान परिवार तथा समस्त सभा को आशीर्वाद दिये । (स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापुनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से, एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी

लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से मंदिर में धनुर्मास में प्रातः महामंत्र धून के बाद कोठारी स्वामी हरिकृष्णदासजीने ''सारसिद्ध'' की कथा तथा ता. १६-१२-१२ से ता. २२-१२-१२ स्नेहगीता की कथा, ता. २६-१२-१२ से ता. ३०-१२-१२ तक निकोल मंदिर में रात्रि ३ बजे स्नेहगीता की कथा की।

ता. ७-१-१३ प्रातः एप्रोच मंदिर से कालुपुर मंदिर तक तथा ता. ७-१-१३ हर्षद कोलोनी के प.भ. दासभाई की प्रेरणा से मंदिर से कालुपुर मंदिर तक धून कीर्तन के साथ हरिभक्तोने पदयात्रा निकाली थी। (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईलोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी धर्मकिशोरदासजी गुरु शा.स्वा. आनंदजीवनदासी की प्रेरणा से मंदिर में धनुर्मास की धुन धूमधाम से हुई। इस प्रसंग पर अहमदाबाद से स्वामी धर्मकिशोरदासजी, ब्र.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा करजीसण से बसु भगत आदि संत-मंडलने कथा वार्ता का लाभ प्रदान किया। ता. २-१-१३ को ठाकुरजी का २० वाँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। कोठारी कीरीटभाई की मातुश्री ताराबहन अमृतलाल पटेल ने पाटोत्सव के यजमान पद का लाभ लिया। ता. ९-१-१३ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया। (कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) विराटयनगर (ओढव)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) ओढव-विराटनगर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद से बहनो द्वारा धनुर्मास में सत्संग प्रवृत्ति अच्छी हुई। जिस में कथावार्ता, धून-भजन, कीर्तन का आयोजन किया गया। ता. १३-१-१३ को प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री पधारी। तथा स्वयं श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की सां. रंजनबा तथा नानीबहन तथा अन्य बहनो ने प.पू. बड़ी गादीवालाश्री का स्वागत-पूजन किया। उसके बाद प.पू. बड़ी गादीवालाश्रीने ठाकुरजी की आरती करके सभा में सभी को आशीर्वाद दिये। (नानी बहन)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा का तीसरा वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) तथा स.गु.शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजी (जमीयतपुरा) की प्रेरणा से प.भ. डाह्याभाई रणछोडभाई तथा अ.नि. उमाबहन के यजमान पद पर श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा का तीसरा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

ता. २०-१२-१२ माधशुक्लपक्ष-८ को सुबह ८-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत-मंडल के साथ पधारे। श्री हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक किया गया। उसके बाद प.भ. प्रकाशभाई सोमाभाई के नये मकान में पदार्पण किये। ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करके सभा में बिराजे। यजमान परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती करके भेट दी। सभा में स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर), स.गु. महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी, स.गु. महंत स्वा. पूर्णप्रकासदासजी, स.गु. स्वा. रामकृष्णदासजी, महंत स्वा. विजयप्रकाशदासजी तथा हार्दिक भगतने प्रवचन किये।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभा को आशीर्वाद प्रदान किया। समग्र प्रसंग में पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा कांकरिया के महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजीके मार्गदर्शन अनुसार पा. हार्दिक भगत तथा कोठारी हिमंतभाईने सुंदर आयोजन किया। सभा संचालन शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजीने किया। सिद्धपुर से सी.पी. स्वामीने सुंदर सेवा की। (कोठारी हिंमतभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मारुसणा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में ता. १६-१२-१२ को चतुर्थ शाकोत्सव प.भ. कालीदास गोकुलदास परिवार के यजमानपद पर धूमधाम से संपन्न हुआ। स.गु. स्वा. रघुवीरचरणदासजीने शाक का वघार किया था। सभा संचालन स्वा. सत्यसंकल्पदासजीने किया था। श्रीजीप्रकाशदासजीने भी सहयोग किया था। शा.स्वा. विश्ववल्लभदासजीने तथा स्वा. प्रेमप्रकाशदासजीने तीन दिन तक कथा प्रवचन का लाभ दिया था। (को. हसमुखभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर

श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर-अमदावाद में पवित्र धनुर्मास के समय प्रातः ५-३० बजे से ६-३० बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र का अलौकिक लाभ दिया गया था।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाला

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैयाधाम सोसायटी तथा कड़ीयावाड दोनो मंदिर लुणावाडा में धनुर्मास में प्रातः धुन-भजन-कीर्तन आदि का कार्यक्रम हुआ। पू. वासुदेव स्वामी तथा घनश्याम स्वामीने भगवान का सुंदर श्रृंगार करके दर्शन करवाया। (लुणावाडा, सत्संग समाज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा

श्रीहरि के प्रसादीभूत कालीयाणा गाँव में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर में सां. बबुबाई की प्रेरणा से ता. ३०-१२-१२ रविवार को भव्य शाकोत्सव हरिभक्तोने मनाया।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा समस्त सत्संगियोंने धनुर्मास में ठाकुरजी की आरती, गाँव में धून-कीर्तन करके प्रसाद का वितरण किया गया।

ता. १३-१-१३ रविवार को भाइयों के श्री स्वामिनारायण मंदिर के समूह महापूजा में ५० जितने भक्तों ने लाभ लिया था । महापूजा विधिशा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने करवाई।

मकरसंक्रांति पर्व पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा गाँव में महामंत्र धून की । जिस में श्रद्धालु भक्तोंने गेहूं, चावल, खिचडी, जीरा, चणादाल, तुवेरदाल, शुद्ध घी, चीनी गुड़, रोकड भेट आदी मिलकर ३४३६० (वस्तु के साथ) अहमदाबाद मंदिर के कोठार में पक्की रसीद लेकर जमा की । कोठारीश्री भुदरभाई तथा वड़ील हरिभक्तोंने भी सेवा की।

(अरजणभाई मोरी)

घाटलोडीया, चांदलोडिया, विस्तार में धनुर्मास का उत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण सत्संग मंडल (घाटलोडीया, चांदलोडिया, सोला) में धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून हरिभक्तोंने साथ मिलकर की । इस मंडल द्वारा हर रविवार तथा एकादशी को शाम ८-३० से १०-३० सत्संग सभा होती है । उपरोक्त विस्तार में रहने वाले हरिभक्तो तथा धार्मिक लोगो को लाभ लेने के लिये विशेष अनुरोधहै।

स्थळ : श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण सत्संग मंडल आई.डी. पटेल स्कूल रोड, गोकुल डेरी के पास, गणेश पार्क कोम्प्लेक्ष, वि-१, घाटलोडिया, अहमदावाद-६१, संपर्क : रमेसभाई वी. पटेल (डांगरवावाले) मो. : ९५८६४२२६०१

श्री स्वामिनारायण मंदिर लांधणज

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) लांधणज में ता. २२-१२-१२ को बहनो की सत्संग शिबिर प्रसंग में अहमदाबाद से समस्त बहनों की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी । दर्शन का लाभ गाँव की बहनोने लिया । धनुर्मास में प्रातः सबेरे बहनोने महामंत्र धून की थी। (कोठारीश्री)

लेई, रतनपर, उमेदगढ, साचोदर में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा ईडर मदंर के महंत स्वामी स.गु. जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से ईडर में धूमधाम से शाकोत्सव मनाया गया । लेई मंदिर के महंत स.गु. भक्ति स्वामी तथा सत्यसंकल्प स्वामी ने शाकोत्सव का आयोजन किया था । महंत शा. हरिजीवनदासजी, स.गु. भक्ति स्वामी, शा.पी.पी. स्वामी, आदि संतोने ईडर के सत्संगियों को सत्संग का सुंदर लाभ दिया । संतोने यजमान परिवार को हार पहनाकर आशीर्वाद दिये।

उसी प्रकार ईडर के रतनपुर, उमेदगढ तथा साचोदर के मंदिरों में भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

(कोठारी सत्यसंकल्पदासजी, ईडर)

मणीयोर मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से मणीयोर मंदिर का ७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर त्रिदिनात्मक श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन कथा शा.स्वा. विश्ववल्लभदासजीने की । सभा संचालन शा. श्रीजीप्रकाशदाजी (सोकली) तथा शा. प्रेमप्रकाशदासजीने किया था । ता. २७-१२-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे । मंदिर में ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती करके पू. महाराजश्री सभा में पधारे यजमानश्री दवाभाई वशरामभाई पटेलने पू. महाराजश्री की पूजा करके आरती उतारी । पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये । इस प्रसंग पर संत-महंत गण पधारे थे । इस प्रसंग में शा. कुंजविहारीदासजी, चंद्रप्रकाश स्वामी तथा धर्मकिशोरदासजी आदि संतोने सुदंर सेवा की । प.पू.आचार्य महाराजश्रीने सत्संग वर्धक आशीर्वाद दिये । समग्र महोत्सव का संचालन कोठारी स्वामी सत्यसंकल्पदासजीने किया था।

(स.गु.शा.स्वा. हरिजीवनदासजी)

कलोल नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर में द्वितीय भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् महंत स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल में द्वितीय शाकोत्सव ता. १३-१-१३ को भव्य आयोजन किया गया । प्रासंगिक सभा में किशोर मंडल तथा युवानो द्वारा कीर्तन-भक्ति की गई । प्रथम यजमान श्री द्वारा पूजन आरती की गयी । इस प्रसंग पर जेतलपुर, महेसाणा, माणसा, इसंड, कांकरीया, कालुपुर, नारणपुरा, जमीयतपुरा, मुली, मकनसर, सापावाडा, सायला आदि स्थानो से संतगण पधारे थे । सभा में पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर)ने शाकोत्सव की महिमा कही । प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से सब्जी का वघार किया । इस प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए श्रीहरि का उत्सव करने के पीछे क्या औचित्य होता है वह समझाया । समग्र शाकोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. डाह्याभाई मणीलाल पटेल ह. पंकजकुमार किरणबाई पटेल (मोखासण) थे । शाकोत्सव का दर्शन करके ४००० से अधिक हरिभक्तोने प्रसाद लिया । समग्र आयोजन महंत स्वामी विश्वप्रकाशदाजी (कलोल महंत)ने किया था । सभापति का स्थान शा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर)ने संभाला था। (महंत के.पी. स्वामी, जेतलपुर)

कोठंबा (पंचमहाल) गाँव में दिव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकासदासजी की प्रेरणा से कोठंबा गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा ता. १२-१-१३ को शाकोत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर कीर्तन-भक्ति के साथ स.गु.शा.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर)ने पधारकर शाकोत्सव का माहात्म्य समझाया था साथ में स.गु. श्यामचरणदासजी स्वामी भी पधारे थे । बड़ी संख्या में हरिभक्तोने शाकोत्सव का लाभ लिया । समग्र आयोजन मंदिर के श्री न.ना.देव युवक मंडल तथा हरिभक्तोने किया । (शा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर), श्री न.ना.देव युवक मंडल, कोठंबा)

आदिश्वरनगर नरोड़ा श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वरनगर नरोड़ा में ता. २३-१२-१२ को आठवाँ शाकोत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर कीर्तन-भक्ति के बाद जेतलपुर से स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी स्वामी तथा श्यामचरणदासजी स्वामी, शा. भक्तिनंदनदास स्वामी, जमीयतपुरा से शा. घनश्यामप्रकाशदासजी, कालुपुर से शा.स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स.गु. बलदेवप्रसाद स्वामी, हरिजीवन स्वामी आदि संतोने पधारकर कथा-वार्ता द्वारा शाकोत्सव का महिमा कही । इस प्रसंग पर बहनो की सेवा सुंदर थी । समग्र आयोजन श्री न.ना.देव युवक मंडल तथा कोठारी प.भ. नविनभाई ने किया था ।(शा. भक्तिनंदन स्वामी जेतलपुर श्री न.ना.देव युवक मंडल)

अडालज गाँव में दिव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु.शा. स्वामी विजयप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अडालज श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा ता. २५-१२-१२ को आठवाँ शाकोत्सव मनाया गया । जेतलपुर में शा. भक्तिनंदनदास स्वामी, भुज से पुराणी स्वामी, विश्वजीवन स्वामी आदि संतोने पधारकर कथा-वार्ता की । बड़ी संख्या में हरिभक्तोने शाकोत्सव का लाभ लिया । समग्र आयोजन श्री न.ना.देव युवक मंडल तथा पू. दिनेश भगतने किया था ।

(पुजारी दिनेश भगत, अडालज)

ट्रेन्ट गाँव में शाकोत्सव का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर ट्रेन्टमां ता. ३०-१२-१२ को शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर ठाकुरजी की समूह महापूजा, उसकेबाद कीर्तन-भक्ति की गई । जेतलपुर से स.गु. विश्वप्रकाश स्वामी, मकनसर से शा. हरिप्रकाशदासजी आदि संतगण पधारे थे । पाटड़ी, विरमगाँव से भी सां.यो. बहने पधारी थी । बहनोने सुंदर सेवा की । हरिभक्तोने शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण किया । कोठारी प.भ. रमेशभाई तथा प.भ. गोविंदभाईने समग्र आयोजन किया ।(शा. भक्तिनंदन स्वामी (जेतलपुर) तथा विष्णुभाई ट्रेन्ट)

नाना उभडा गांव में प्रथम भव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकासदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ४-१-१३ को प्रथम शाकोत्सव का आयोजन किया गया । प्रासंगिक सभा में युवानो द्वारा कीर्तन भक्ति की गयी । इस प्रसंग पर जेतलपुर, मेहसाणा, माणसा, कालुपुर, नारणपुरा में बड़ी संख्या में संतगण पधारे थे । पाटडी, विरमगाँव से सां.यो. बहनेंभी पधारी थी । अंत में शाग का बघार किया गया । समग्र शाकोत्सव के यजमान पद का लाभ प.भ. पटेल बचुभाई प्रितमभाई (कोठारी) सुपुत्र प.भ. जसुभाई तथा दिनेशभाई ने लिया । समग्र आयोजन भक्तिनंदन स्वामी (जेतलपुर) ने किया था । (शा.भक्तिनंदनद स्वामी (जेतलपुर) तथा दिनेशभाई पटेल नाना उभड़ा)

नारायणनगर (जेतलपुर) में दिव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वा. श्यामचरणदासजी की प्रेरणा से नारायणनगर (जेतलपुर) श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा ता. ५-१-१३ को शाकोत्सव का आयौजन किया गया । इस प्रसंग पर स.गु.शा. पी.पी. स्वामी, स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकासदासजी, महंत स्वा. के.पी. स्वामी, शा. भक्तिवल्लभ स्वामी आदि संतोने पधारकर कथा-वार्ता के साथ शाकोत्सव का माहात्म्य कहा । बड़ी संख्या में हरिभक्तोने शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण किया । समग्र आयोजन कोठारी प.भ. हितेशबाई तथा युवक मंडलने किया था । (के.पी. स्वामी, महंतश्री जेतलपुर)

वसई, डाभला श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् अ.नि. स.गु.शा.स्वा. अर्जुनप्रसाद स्वामी तथा अ.नि.स.गु.स्वा. नरहरिप्रसाददासजी के आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकासदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर वसई डाभला में ता. ७-१-१२ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर ठाकुरजी की शोभायात्रा निकाली गई । सभा में जेतलपुर से स.गु.सा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा जमीयतपुरा से शा.घनश्यामप्रकासदासजी, मेहसणा, कलोल, मकसनर, जेतलपुर, माणसा, मूली आदि स्थानों से संत गणोने

पधारक कथावार्ता की । शाकोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. चावड़ा विक्रमसिंह नारायणसिंह तथा तमाम यजमानो का सन्मान किया गया । शाग का बघार किया गया । अंदाजित ८ हजार से भी अधिक हरिभक्तोने शाकोत्सव का प्रसाद लिया । इस प्रसंग पर बहनो की सेवा प्रेरणात्मक थी । सभापति का स्थान शा. भक्तिनंदन स्वामी तथा शा. हरिप्रकाशदासजीने शोभित किया । समग्र आयोजन गाँव के युवको तथा श्री न.ना.देव युवक मंडलने किया था । (शा.भक्तिनंदन स्वामी (जेतरलपुर) तथा युवक मंडल वसई)

माणेकपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर (चौधरी) में पंचम शाकोत्सव का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर में ता. ७-१-१३ को पंचम शाकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया । न.ना. देव युवक मंडल के युवानो द्वारा कीर्तन-भक्ति का आयोजन किया गया था । उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संतो के साथ पधारे । प्रथम यजमानश्री द्वारा पूजन आरती की गयी । इस प्रसंग पर विशाल संख्या में अंदाजित ४५ से अधिक संगतण उपस्थित थे । जिस में जेतलपुर, मेहसाणा, माणसा, इसंड, कांकरिया, भातुपुर, नारणपुरा, जमीयतपुरा, कलोल, मूली, मकनसर, धोलका, सापावाडा, सायला आदि स्थानों से संतगण पधारे थे । पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) ने शाकोत्सव का माहात्म्य कहा । प.पू. आचार्य महाराजश्री ने इस प्रसंग पर आशीर्वाद दिये । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने शाग का वघार किया । समग्र शाकोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. चौधरी लीलाबहन रामाभाई (आमजावाले) थी । शाकोत्सव का दर्शन करके ९००० से अधिक हरिभक्तोंने प्रसाद लिया । बहनों की सेवा प्रेरणारुप थी । समग्र आयोजन शा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा)ने किया । सभापति का स्थान शा. भक्तिनंदन स्वामी (जेदलपुर)ने संभाला था । (कोठारी चौधरी रमेशबाई तथा चौधरी जगदीशभाई - माणेकपुर)

शियाल (नलकंठोदेश) गाँव में शाकोत्सव का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से शियाल श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा ता. १०-१-१३ को प्रत्येक वर्ष की तरह इस बार भी शाकोत्सव का आयोजन किया गया । शाग का बघार संतो के द्वारा किया गया । बाल मंडल द्वारा कीर्तन भक्ति के बाद स.गु.शा.स्वा. श्यामचरणदासजी, शा. भक्तिवल्लभ स्वामी, शा. भक्तिनंदन स्वामीने कथावार्ता शाकोत्सव की महिमा समझायी ।

(शा. भक्तिनंदन स्वामी तथा अरविंदभाई शियाल)

बालवा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ८ वीं सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्दप्रसादजी की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवम् स.गु.शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव गादी के संरक्षक शूरवीर संत अ.नि.स.गु.शा.स्वा. मुकुंदजीवनदासजी जैसे समर्थ संतो की जन्म भूमि में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित पवित्र धनुर्मास में ८ वें ज्ञानयज्ञ श्रीमद् भागवत् सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया । वक्ता पद पर स.गु.शा. उत्तमचरणदासजी गुरु अ.नि.स.गु. पुराणी स्वामी घनश्यामजीवनदासजी (भुज-कच्छ) तथा सहिंता पाठ के वक्ता पद पर शा. उत्तमप्रियदासजी (मेहसाणा) बिराजमान थे । ता. २४-१२- को प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शोभायात्रा तथा पोथीयात्रा प.भ. जेसींगभाई लालाभाई चौधरी के घर से धूमधाम से निकाली गयी । प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा वक्ताश्री का पूजन यजमान परिवार द्वारा किया गया । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने दीप प्रागट्य किया । ता. २९-१२ को कथा में दर्शन देने हेतु प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.श्रीराजा पधारी थी । बाल मंडल के तथा यजमानश्री के पौत्र जप बकोभाई चौधरीने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन किया था । ता. ३०-१२ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। उनके हाथों से मंदिर में ठाकुरजी का महाभिषेक तथा अन्नकूट आरती की गयी । इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री बहनों को दर्शन देने हेतु पधारी थी । सभा में बड़े महाराजश्री ने कथा की पूर्णाहुति की । तथा वक्ताश्री का पूजन किया । यजमान प.भ. बकाभाई जेशंगभाई चौधरीने बड़े महाराजश्री का पूजन किया । पू.बड़े महाराजश्रीने हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये । जेतलपुर, गांधीनगर, कालुपुर, माणसा, कलोल, कांकरिया, नारायणपुरा, सायला, मकनसर, मूली, रतनपर, जमीयतपुरा आदि स्थानो से संतगण पधारे थे । आनेवाले ९ वे ज्ञानयज्ञ की भी घोषणा की गयी । इस प्रसंग पर श्री न.ना.देव युवक मंडल की सेवा तथा बालमंडल की सेवा प्रशंसनीय थी । समग्र आयोजन जेतलपुर के संतो ने किया था । सभापति का स्थान शा. भक्तिनंदन स्वामीने शोभित किया । अंदाजित १५०० हरिभक्तोंने प्रासद ग्रहण किया । (महंत श्री के.पी. स्वामी, जेतलपुर, अमृतभाई चौधरी, बालवा)

कोचरब (अहमदाबाद) में सुवर्ण जयंती उत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कौशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से एवम् महंत स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोचरब अहमदाबाद में हरिमंदिर में बिराजमान अर्चावतार

घनश्याम महाराज का ५० वाँ वार्षिक प्रतिष्ठा विधिसुवर्ण जयंती महोत्सव समस्त हरिभक्तोंने धूमधाम से ता. २५-१-१२ से २९-१२-१२ को मनाया । जिसमें श्रीमद् भागवत पंचाह पारायण आयोजन किया गया । वक्तापद पर शा. घनश्यामप्रकाशदासजी (जमीयतपुरा) बिराजमान ता. २७-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे । उनका पूजन महोत्सव के मुक्य यजमान प.भ. अंबालाल लालुभाई पटेल तथा सुमनभाई शकरचंदभाई पटेलने किया । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभा में आशीर्वाद दिये । इस प्रसंग पर महाविष्णुयाग का आयोजन किया गया । ता. २९-१२ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । उनके वरद् हाथों से ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट आरती तथा विष्णुयाग की पूर्णाहुति के दर्शन भाविक भक्तोंने किये । सभा में कथा का समापन, वक्ताश्री का पूजन, पू. बड़े महाराजश्री का पूजन, प.भ. विरललाल चुनीलाल पटेल परिवारने किया । अहमदाबाद, जेतलपुर, माणसा, मकनसर, कलोल, मेहसाणा, आदि स्थानो से संत-महंतगण पधारे थे । यशश्वी यजमानश्रीओ का सन्मान प.पू. बड़े महाराजश्रीने किया । समग्र आयोजन जेतलपुर के संत तथा विश्वप्रकाश स्वामी (कलोल)ने किया । सभापति का स्थान शा. हरिप्रकाशदासजी (मकनसर)ने शोभित किया । कोचरब के युवको की सेवा प्रेरणारुप थी ।

(स्वामी श्यामचरदासजी, शा. भक्तिनंदन स्वामी, जेतलपुर)

जेतलपुर में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में धून का आयोजन

महाप्रतापी श्री रेवती बेलदवेजी हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में तथा ब्रह्मनिष्ठ संतो तथा हजारो हरिभक्तो, बालको, युवानो की उपस्थिति में ता. १६ दिसम्बर से पवित्र धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन घनश्याम भुवन में की गयी । ठाकुरजी का श्रृंगार रुजारी ब्रह्मचारी पूर्णानंदजी स्वामीने किया । पूनम को प्रातः प.पू. बड़े महाराजश्रीने पधारकर सभी को प्रसन्न कर दिया । स.गु.शा. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार तथा समग्र व्यवस्था तथा सेवा महंत के.पी. स्वामी, वडील स्याम स्वामी तथा संतमंडल ने की ।

(भंडारी कान्तिभाई, विद्यार्थी संदिप भगत, जेतलपुर)

माणसा श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा द्वारा ता. ५-१-१३ को भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया । प्रासंगिक सभा में श्री न.ना.देव युवक मंडल द्वारा कीर्तन भक्ति की गयी । उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संतगणों के साथ पधारे । यजमानश्री द्वारा आरती पूजन की गयी । यजमानश्रियों तथा मेहमानश्रियों का समान किया गया । इस प्रसंग पर जेतलपुर, इसंड, कालुपुर, जमीयतपुरा, कलोल, मूली, मकनसर से संतगण पधारे थे । पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर)ने शाकोत्सव की जानकारी दी । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये और शब्जी का बघार किये । समग्र शाकोत्सव के मुख्य यजमान सेठश्री नारायणभाई पटेल थे । शाकोत्सव का दर्शन करने के लिये करीब ९००० जितने भक्त आये थे । बाद में उस शाग का सभी प्रसाद लेकर धन्य हुये थे । इस प्रसंग पर बहनों का रोटी बनाने में प्रसंशनीय योगदान रहा । इस कार्यक्रम का आयोजन घनश्याम स्वामीने किया था । सभापति का स्थान भक्तिनंदन स्वामी (जेतलपुर) तथा शा. हरिप्रकाशदासजी मकनसर महंत ने प्राप्त किया था । श्री न.ना.देव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी ।

(को. चन्द्रप्रकाश स्वामी जयेश पटेल, माणसा)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींमडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के महंत स्वामी भक्तवत्सलदासजी के मार्दर्शन में पूरे धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन घनश्याम महाराज के समक्ष की गयी थी ।(को. वन्दनप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के संत नरनारायणदासजी की प्रेरणा से पुरे धनुर्मास महीने में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन हरिभक्तोंने की थी । के.पी. स्वामीने शिक्षापत्री भाष्य की कथा की थी तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था । उत्तरायण के दिन बालको को उत्साहित करने के लिये इनाम वितरण किया गया था । कालु भगतने आयोजन किया था । (कोठारीश्री)

जामनसर (हालार) गाँव में दिव्य शाकोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी नारायणप्रसाददासजी की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ४-१-१३ को दिव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर भजन-कीर्तन स्वामी हरिप्रकाशदासजी तथा जेतलपुर से शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी ने वधार कर कथावार्ता द्वारा शाकोत्सव की महिमा समझाया । बड़ी संख्या में हरिभक्तोंने शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण किया । बहनोने सुदंर सेवा की थी ।

(पार्षद विवेक भगत, कमनसर)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायणमंदिर शिकागो (आई.एस.एस.ओ.)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग की अनेक प्रवृत्ति-उत्सव मनाये गये ।

धनुर्मास में प्रातः ठंढी में हरिभक्तगण धून का लाभ लेने पधारे थे। कथावार्ता तथा प्रसाद का लाभ लिया । पुजारी स्वामी शांतिप्रसाददासजीने कथा का रसपान करवाया । मकर संक्रांति

को (साम की सभा में) श्री दिनेशभाई जोशी आदिने भिक्षा मांगने का कार्य किया था। (वसंत त्रिवेदी)

वोशिंग्टन डी.सी. श्री स्वामिनारायणमंदिर (आई.एस.एस.ओ.)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से मंदिर में डिसम्बर महिने की १८, १५, २२ तारीख तथा १०, २४, २८ को (एकादशी-पूनम) को सत्संग सभा हुई। जिस में वचनामृत (२७३) वाचन, जनमंगल पाठ, भेट आरती की गयी। चेरीहिल मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से एन.एन.डी.वाय.एम. बालकों की शिबिर का आयोजन हुआ जिस में १५ बालकोने लाभ लिया।

(कनुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायणमंदिर लोसएंजलस (आई.एस.एस.ओ.)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से वर्तमान एल.ए.श्री स्वामिनारायण मंदिर में संत हरिभक्तों द्वारा ता. ३१-१२ से ता. १-१-१३ तक २४ घंटे की अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन का आयोजन किया गया।

१ जनवरी नूतन वर्ष को ४०० जितने हरिभक्तोंने जपयज्ञ का लाभ लिया। ४० जितने भाई-बहनो ने भी २४ घंटे धुन का लाभ लिया। नये नियुक्त प्रेसिडेन्ट प.भ. देवराजभाई केराई तथा कोठारी भक्तिभाईने भक्ति भावपूर्वक धून में बैठने वाले हरिभक्तो को तीन वक्त का महाप्रसाद, नास्ता, दूधपानी की सुंदर व्यवस्था की गयी। महाप्रसाद के यजमान श्री रसिकभाई परीख थे। अन्य रसोई की सेवा युवान भाई बहनोने सुंदर की थी।

(देवराजभाई केराई, प्रेसिडेन्ट)

श्री स्वामिनारायणमंदिर ह्युस्टन (टेक्सास) (आई.एस.एस.ओ.) में मकर संक्रान्ति और धनुर्मास सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी एवं पुजारी घनश्यामचरणदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन में १२ जनवरी रविवार सायंकाल को झोलीपर्व का कार्यक्रम हुआ था। धनुर्मास में प्रातः काल पूरे महीने धून की गयी थी। महंत स्वामीने सभा में कथा प्रवचन के बाद कीर्तन करवाया था। उत्तरायण के शुभ अवसर पर मकर संक्रांति का माहात्म्य समझाया गया था। इस प्रसंग पर ठाकुरजी के सिंहासन को नाना विधअलंकृत किया गया था। प्रत्येक हरिभक्त जनमंगल का पाठ करके दर्शन करके स्वस्थान प्रस्थान किये थे। (महंत स्वामी)

श्री स्वामिनारायणमंदिर कोलोनिया (आई.एस.एस.ओ.)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी ज्ञानप्रकादासजी एवं स्वा. नरनारायणदासजी की प्रेरणा से उत्तरायण पर्व के अवसर पर महापूजा तथा सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में सभी भक्त भाग लिये थे। नरनारायण स्वामीने भिक्षाटन पर्व का माहात्म्य समझाया था। अन्त में समूह जनमंगल पाठ का आयोजन किया गया था। सेवा करने वाले भक्तों को बहुमानित किया गया था। (प्रवीण शाह)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

दाहोद : प.भ. कनुभाई जयंतीलाल मोढीया की माताजी प.भ. मणीबहन ता. २४-१२-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

नांदोल (पालनपुर) : हमारी बड़ी बहन पटेल भारतीबहन नटवरलाल ता. ३-१-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

दहेगाँव : प.भ. विष्णुभाई शांतिभाई पटेल ता. १६-१२-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए है।

लक्ष्मीपुरा (वटवा-अमदावाद) : प.भ. भीखुभाई रामभाई चावडा ता. १३-१-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए है। (कालुपुर मंदिर का ड्राईवर विजय के दादा थे)

अमदावाद : प.भ. जयंतीलाल गीरधरलाल मीस्त्री (धोलेरावाले) की धर्मपत्नी प.भ. शारदाबहन ता. १९-१-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

जीरागढ (हालार-मूली देश) : प.भ. राजेशभाई सवजीभाई वरु की दादीमां गोमतीबहन प्रेमजीभाई वरु (उम्र १०१) ता. ८-१-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

मांडवी (कच्छ) : श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान तथा धर्मकुल के कृपापात्र प.भ. नारणभाई शामजी हीराणी की माताजी, तथा अशोकभाई (पौत्र) एवं प्रपौत्र हरेन्द्र (लंडन यु.के.) की दादी मां प.भ. वीरबाई शामजी हीराणी (उम. ८७ वर्ष) ता. २४-१-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।